International Journal of Applied Research 2020; 6(3): 130-138

**ISSN Print:** 2394-7500
**ISSN Online:** 2394-5869
**Impact Factor:** 5.2
IJAR 2020; 6(3): 130-138
www.allresearchjournal.com
Received: 17-01-2020
Accepted: 19-02-2020

**Dr. Ajay Krishan Tiwari**
Teacher Educator & Research Guide, Sr.Lecturer, CTE / BTTC - G.V.M & Former H.O.D Department of Education- IASE Deemed to be University, Sardarshahar, Rajasthan, India

**Corresponding Author:**
**Dr. Ajay Krishan Tiwari**
Teacher Educator & Research Guide, Sr.Lecturer, CTE / BTTC - G.V.M & Former H.O.D Department of Education- IASE Deemed to be University, Sardarshahar, Rajasthan, India

# चेतना विकास मूल्य शिक्षा का किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

## Dr. Ajay Krishan Tiwari

### 1. प्रस्तावना

भारत अपनी विरासत, शिक्षा, दर्शन व संस्कृति की गौरवशाली इतिहास पर सदैव ही गर्व करता रहा है। वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी भी भारत को पुनः विश्वगुरू बनाने का लक्ष्य रखते है, परन्तु वर्तमान स्थिति में हमारा राष्ट्र, समाज निरन्तर नैतिक पतन और आतंक की और अग्रसर होता जा रहा है। भौतिक जीवन की अंधी दौड़ में अपने कर्तव्यों, आदर्शों, सस्कार को भूल चुका है। आज विश्व में चारों और अशांति है आराजकता है, क्योकि शाश्वत मानवीय मूल्य, भौतिक मूल्यों से प्रभावित हो रहे है। आज का समाज एक परिर्वतन के दौर से गुजर रहा है। हमारे भारत में व्याप्त भ्रष्टाचार, अलगाववाद, जातिवाद, आतंकवाद, मूल्य–संकट एवं हिंसा के दौर को देखे तो ऐसा लगता ही नहीं कि कभी भारतीय–संस्कृति सर्वे भवंतु सुखिनः, वसुधैव कुटुम्बकम, पापाय परपीड़नम्, मनुष्य में देवत्व एवं सर्वशान्ति की स्थापना जैसे आदर्शों व मूल्यों की अधिष्ठात्री रही है। भारतीय संस्कृति व दर्शन अपने स्थापना–काल से लेकर आज तक मूल्यों व आदर्शों का प्रतिमान रहा है। इस कारण मूल्य निरूपण व इस दिशा के शैक्षिक–मॉडल की दृष्टि से भारतीय शिक्षा–दर्शन एवं उसके तद्नुरूप जीवन–शैली एक अग्रगामी उपागम है, लेकिन वेदना यह है कि ऐसी समृद्ध विरासत होने के बावजूद आज हम अशांत व मूल्यहीन–पर्यावरण के गर्त में पड़े हुए है।[1]

मानव ही अस्तित्व समग्र में अस्तित्व को समझने योग्य इकाई है। मानव, किसी अन्य मानव से ही समझता है। साथ ही, संपूर्ण को समझना मानव की तृप्ति के लिए मानव की ही आवश्यकता है। अर्थात् संपूर्ण अध्ययन मानव से, और मानव के लिए है। मानव स्वयं को जैसा समझा होता है उसी आधार पर संपूर्ण को समझता है। इसका तात्पर्य यह हैः स्वयं की समझ में, मानव के लक्ष्य को, किसी रूप में पहचानना समाहित है। मानव इसी लक्ष्य के आधार पर अन्य सभी परस्परताओं से अपना संबंध पहचानता है, और उस अनुरूप उनके साथ आचरण–कार्य–व्यवहार करता है। अतः मानव के लिए स्वयं को समझना एक सुलभ शुरूआत या अनिवार्यता ही नहीं, किसी भी दर्शन का मूल ध्रुव है। मानव के अध्ययन में दिलचस्प बात यह है कि इन सभी तथ्यों की जाँच हम स्वयं में कर सकते हैं। और स्वयं में ही कर सकते हैं अर्थात् मानव के अध्ययन का प्रमाण कोई पुस्तक या व्यक्ति नहीं होगा, हम स्वयं ही होंगे।

मानव द्वारा रचित एक समूह है परिवार। हर समूह के गठन के पीछे कोई निष्चित ध्येय अथवा उपयोगिता होती है। और गठन की सफलता सभी सदस्यों का उस ध्येय को स्वीकारने एवं उसकी पूर्ति की विधि पहचान कर जीने पर निर्भर करती है। अतः परिवार को सफल बनाना, परिवार की उपयोगिता और उसकी पूर्ति की विधि को समझने पर टिकी है।

शरीर पोषण एवं शरीर गति के लिए वस्तुओं का उत्पादन एक अनिवार्यता है। कोई न कोई उत्पादन प्रणाली भी हर समाज में प्रचलित होती ही है। मानवीय समाज में इसके आधार बिन्दुओं की एक संक्षिप्त चर्चा यहाँ प्रस्तुत है। एक दूसरी विधि से देखें तो वर्तमान उत्पादन प्रणाली में दोष निम्न बिन्दुओं के अभाव का ही है। हर परिवार का उत्पादन से जुड़ा होना अनिवार्य है। आहार, आवास और समान्य साधनों के उत्पादन के संसाधनों पर परिवार का सुनिष्चित अधिकार–फलतः सामान्य आवश्यकयताओं की पूर्ति के प्रति आश्वस्तता हर परिवार में निरंतर बनी रहे।

1 लोढा, जितेन्द्र कुमार (2011) "मूल्य षिक्षा का बालकों के व्यक्तित्व विकास पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन", पृ. सं. 2

### 1.1 अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व

समाधान का अभाव ही समस्या है। प्रकृति में केवल समाधान ही है, समस्या इसे प्राप्त नहीं कर पाने में है। अधिकांश चर्चा समस्याओं की ही होती है। कहीं पर भी, विचार विमर्श जहां हो रहा हो, वहां कमियों या बाधाओं की गिनती चलती रहती है। यदि किसी विद्यालय को चर्चा के केन्द्र में लायें तो विद्यालय में अभावों की लंबी सूची बन जाती है और इन अभावों का प्रक्षेपण विद्यालय की समस्याओं के रूप में सामने आती है। जबकि बुनियादी तौर पर विद्यालय को सामाजिक व्यवस्था के एक घटक के रूप में स्वयं में व्यवस्था माने, जो कि स्वयं तो कार्य कर रहा है, साथ ही समाज की व्यवस्था की सुदृढ़ संचालन में अपनी भागीदारी भी निभा रहा है। तब विद्यालय की सही भूमिका स्पष्ट होती जाती है। इसी प्रकार विद्यालय के स्तंभ के रूप में भौतिक संसाधन महत्वपूर्ण स्तंभ नजर आते है किन्तु वास्तव में इसका उपयोग, सदुपयोग या दुरूपयोग करने वाला सचेत या सजग शिक्षक उससे भी अधिक महत्वपूर्ण स्तंभ है। इस समझ के साथ उस विद्यालय के सतर्क व सजग शिक्षक सहज रूप से अपना कार्य संचालित करते हैं। तब उन्हें शाला, छात्र या पालक कभी भी समस्या नहीं लगते। शाला में अध्यापन कार्य उस एक शिक्षक के लिए आनंद का स्थल होता है। ठीक वैसे ही जैसे हर व्यक्ति के लिए परिवार शांति व सुकुन का स्थल रहता है। पर यह कब संभव है? तब जब हमें विद्यालय या परिवार की यथार्थता की समझ हो। विद्यालय जिज्ञासा को शांत कर सके, परिवार अड़चनों कठिनाइयों से पार लगा सके। ये कार्य यदि इन स्थलों पर हो रहा है, तो ये समाधान केन्द्र हुए न कि समस्या केन्द्र।

हम देख रहे हैं कि वर्तमान युग शिक्षा प्रधान युग है। आज जीवन के हर क्षेत्र का मूल्यांकन शिक्षा के विभिन्न आयामों से ही निष्चित किया जा रहा है। अतः सीधे–सीधे मूल्यों की शिक्षा न देकर मूल्यों के प्रकाश में शिक्षा दिया जाये तो मूल बातों की समझ से समाधानकारक शिक्षा की संभावना बनती है। जैसा कि अपने शोधपत्र में डॉ. प्रभाकर सिंह ने लिखा है, "शिक्षा एक ऐसी शक्ति है जो मानव बनाने में सहायक सिद्ध होती है और यह हमारे भावी नागरिकों (विद्यार्थियों) पर अपना प्रभाव किसी न किसी मूल्य के रूप में डालती है। इस कारण से विद्यार्थियों को जिस प्रकार की शिक्षा परिवार, विद्यालय, या समाज के चारों ओर से प्राप्त होती है। उसी के अनुरूप उनमें मूल्य विकसित हो जाते हैं।'' शोधपत्र से यह निष्कर्ष ध्वनित होता है कि वातावरण शिक्षा को प्रभावित करता है एवं शिक्षा संस्कार प्रदान करती है साथ ही व्यक्तित्व एवं कृतित्व का भी विकास करती है।

मध्यस्थ दर्शन अर्थात एक ऐसी विचारधारा जो विश्व की दो प्रमुख विचारधाराओं भौतिकवादी और अध्यात्मवाद की अतियों के "मध्य का मार्ग'' प्रस्तुत करने हुए तन, मन, धन, से समझदारी पूर्वक और सदुपयोग पूर्वक जीवन जीने का मार्ग प्रषस्त करती है। मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) प्रकृति में मेरी खुशी एवं सबकी तृप्ति के साथ सहअस्तित्व की प्रधानता को स्वीकारता है, जिससे 'जीने दो और जियो' एक मूल मंत्र बन जाता है। यह पूर्व धारणा 'जियो और जीने दो ' से कहीं अधिक जिम्मेदारी का भाव व्यक्ति में सुदृढ़ करता है, क्योंकि सहअस्तित्व का आशय ही समान महत्व एवं समान भागीदारी को निरूपित करता है। असमानता उत्पन्न करने वाले दृष्टिकोण यथा स्त्री–पुरूष असमानता व अमीरी–गरीबी में असंतुलन का बना रहना सभ्य समाज के संतुलित विकास में बहुत बड़ी बाधा है। मूल्यों के प्रकाश में शिक्षा का पुर्नपरिभाषाकरण किया जाए तो समानता व संतुलन लाया जा सकता है। क्योंकि मानव–मानव में समानता का भाव एवं इससे निर्मित आधार समाधान का द्वार खोलता है। इस प्रकार समाधानित व्यक्ति ही सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करता है। मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) वर्तमान में विश्व समुदाय के समक्ष एक ऐसा अभिकल्प (मॉडल) प्रस्तुत करता है। जिसमें निरन्तर सुख प्रत्येक व्यक्ति को उपलब्ध होगा, व्यक्ति शिक्षित और संस्कारित होगा साथ ही उसके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का विकास भी संभव हो सकेगा।[2]

### 1.2 अध्ययन का औचित्य

जनवरी 1944 में केन्द्रीय शिक्षा–सलाहकार बोर्ड (Central Advisory Board of Education) ने लाहौर के बिषप बानें (G.D.Barne) की अध्यक्षता में 'धार्मिक शिक्षा समिति' (Religious Education Committee) की नियुक्ति की और इससे शिक्षा–संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा दिये जाने के संबंध में सुझाव मांगे। इस 'समिति' ने अपनी 1946 की रिपोर्ट में धार्मिक और नैतिक शिक्षा की विषय–सामग्री के संबंध में निम्नलिखित सुझाव दिये –

1. सब धर्मों के सामान्य, नैतिक और आध्यात्मिक सिद्धान्तों को पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बनाया जाय।
2. शिक्षा की प्रत्येक योजना में जीवन के नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को स्थान दिया जाय।
3. सब धर्मों की सम्मति से उसके सामान्य, नैतिक और आध्यात्मिक सिद्धांतों का शैक्षिक कार्यक्रम तैयार किया जाय।

**विभिन्न आयोगों के अनुसार (According to Various Commission) –** 1948 में डॉ. राधाकृष्णन की अध्यक्षता में नियुक्त किये जाने वाले 'विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग' ने धार्मिक और नैतिक मूल्य शिक्षा की विषय वस्तु के बारे में अधोलिखित सुझाव दिये –

- जीवन मूल्यों की शिक्षा को अनिवार्य करना।
- छात्रों की सुपर एनर्जी को चेनेलाईज करना ।
- सामाजिक कार्य का पाठ्यक्रम हो।

**विद्यालय स्तर पर**

1. छात्रों को श्रेष्ठ नैतिक और धार्मिक सिद्धांतों को व्यक्त करने वाली कहानियाँ पढ़ायी जायें।
2. छात्रों को महापुरूषों की जीवनियाँ आदि पढ़ायी जायें।
3. जीवनियों में महापुरूषों की श्रेष्ठ भावनाओं एवं उच्च विचारों को रखा जायें।

प्रस्तुत अध्ययन की सार्थकता राष्ट्रीय, सामाजिक और शैक्षिक दृष्टि से भी अधिक है। औपचारिक और अनौपचारिक सभी प्रकार की शिक्षा के उद्देष्य है विद्यार्थियों एवं शिक्षकों में ऐसे मूल्यों का विकास जो बालक राष्ट्र, समाज, के लिए हितकारी हो। अतः इस अध्ययन का क्षेत्र व्यापक है और सार्थकता या उपयोगिता की दृष्टि से आधुनिक समय की यह विशेष मांग है।

### 1.3 अध्ययन के उद्देश्यः–

1. किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभावों का अध्ययन करना।
2. चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले एवं ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास का तुलनात्मक अध्ययन करना।

### 1.4 परिकल्पनायेंः–

1. किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
2. चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले एवं ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

---

2 ए. नागराज (2004) "मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान'' जीवन विद्या प्रकाषन अमरकंटक, श्री भजन आश्रम अमरकंटक पृ. सं. 26

### 1.5 शोध विधि (Mathods of the Study)

समस्या की प्रकृति व पृष्ठभूमि को देखते हुए प्रस्तुत समस्या के अध्ययन के लिए अनुसंधान का स्वरूप "प्रयोगात्मक अनुसंधान" निश्चित किया गया है।

### 1.6 न्यादर्श (Sampling)

प्रस्तुत शोध कार्य में मीरां निकेतन उच्च माध्यमिक विद्यालय, गाँधी विद्या मंदिर, सरदारशहर की कक्षा नवीं के साठ छात्राओं तक ही सीमित रखा गया है। जिसमें तीस छात्राएँ नियंत्रित–समूह के अन्तरगत तथा तीस छात्राएँ प्रयोगात्मक –समूह के रूप में चिन्हित किये गये हैं।

1. यादृच्छिक विधि से न्यादर्श का चयन।
2. नियंत्रित व प्रायोगिक समूहों का निर्धारण

### 1.7 शोध कार्य में प्रयुक्त उपकरण

**मानकीकृत उपकरणों के शोध कार्य में अनुप्रयोग आयोजन–**

"आयामी व्यक्तित्व अनुसूची" (DPI) 2003 डॉ. महेश भार्गव द्वारा निर्मित शोध आकल्प में आश्रित चर–व्यक्तित्व एवं कृत्तित्व विकास पर स्वतंत्र चर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभाव को मापन की दृश्टि से व्यक्तित्व मापना का मानकीकृत परीक्षण डॉ. महेश भार्गव द्वारा निर्मित "आयामी व्यक्तित्व अनुसूची" (DPI) 2003 को प्रयोग में लिया जाएगा,

### 1.8 अनुसंधान में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत प्रयोगात्मक अध्ययन में पूर्व व पश्च परीक्षणों की दृश्टि से विष्लेषण हेतु सांख्यिकी–उपकरण के रूप में मध्यमान (Mean)] मानक विचलन (S.D.), प्रतिशतता (Precentage) व 'टी' मान ('T' Test) का प्रयोग किया जाएगा।

### 2. दत्तों का सारणीयन एवं विश्लेषण (Analysis and Tabulation of Data)

परिकल्पना संख्या – 1 – किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

परिकल्पना संख्या – 1.1 – किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "सक्रियता बनाम निश्क्रियता" पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

**सारणी संख्या – 1:** किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "सक्रियता बनाम निश्क्रियता" पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभाव की प्रतिशतता व स्तर

| नियंत्रित समूह के किशोर विद्यार्थी | | | | |
|---|---|---|---|---|
| प्राप्तांक | कुल संख्या | **वर्गवार संख्या** | प्रतिशत | वर्गीकरण |
| 18 व अधिक | 30 | 3 | 10.00 | उच्च स्तरीय |
| 11 से 17 | | 23 | 76.67 | मध्यम स्तरीय |
| 10 व इससे कम | | 4 | 13.33 | निम्न स्तरीय |
| **प्रायोगिक समूह के किशोर विद्यार्थी** | | | | |
| 18 व अधिक | 30 | 13 | 43.33 | उच्च स्तरीय |
| 11 से 17 | | 16 | 53.33 | मध्यम स्तरीय |
| 10 व इससे कम | | 1 | 3.33 | निम्न स्तरीय |

(MEAN+SD) (MEAN-SD)

**विश्लेषण :–** उक्त तालिका में किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "सक्रियता बनाम निष्क्रियता" पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभाव की स्थिति के आधार पर नियंत्रित व प्रायोगिक समूह को तीन श्रेणीयों में बांटा गया, चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभाव की उच्च स्थिति, मध्यम स्थिति व निम्न स्थिति।

तालिका में कुल 30 नियंत्रित समूह के किशोर विद्यार्थियों में से उच्च स्थिति, मध्यम स्थिति व निम्न स्थिति वाले किशोर विद्यार्थियों की संख्या क्रमशः 3, 23 व 4 पायी गयी जो कि कुल की क्रमशः 10.00, 76.67 व 13.33 प्रतिशत है। तथा कुल 30 प्रायोगिक समूह के किशोर विद्यार्थियों में से उच्च स्थिति, मध्यम स्थिति व निम्न स्थिति वाले किशोर विद्यार्थियों की संख्या क्रमशः 13, 16 व 1 पायी गयी जो कि कुल की क्रमशः 43.33, 53.33 व 3.33 प्रतिशत है। गणना द्वारा प्राप्त नियंत्रित व प्रायोगिक समूह के किशोर विद्यार्थियों के प्रतिशत के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रायोगिक समूह के किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "सक्रियता बनाम निश्क्रियता" में सक्रियता का स्तर उच्च हुआ है। तथा उच्च, मध्यम व निम्न स्थिति वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "सक्रियता बनाम निष्क्रियता" पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

**परिकल्पना संख्या – 1.2 – किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "उत्साहपूर्ण बनाम निरूत्साहपूर्ण" पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।**

**सारणी संख्या – 2:** किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "उत्साहपूर्ण बनाम निरूत्साहपूर्ण" पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभाव की प्रतिशतता व स्तर

| नियंत्रित समूह के किशोर विद्यार्थी | | | | |
|---|---|---|---|---|
| प्राप्तांक | कुल संख्या | **वर्गवार संख्या** | प्रतिशत | वर्गीकरण |
| 18 व अधिक | 30 | 3 | 10.00 | उच्च स्तरीय |
| 11 से 17 | | 20 | 66.67 | मध्यम स्तरीय |
| 10 व इससे कम | | 7 | 23.33 | निम्न स्तरीय |
| **प्रायोगिक समूह के किशोर विद्यार्थी** | | | | |
| 18 व अधिक | 30 | 7 | 23.33 | उच्च स्तरीय |
| 11 से 17 | | 18 | 60.00 | मध्यम स्तरीय |
| 10 व इससे कम | | 5 | 16.67 | निम्न स्तरीय |

(MEAN+SD) (MEAN-SD)

**विश्लेषण :–** उक्त तालिका में किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "उत्साहपूर्ण बनाम निरूत्साहपूर्ण" पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभाव की स्थिति के आधार पर नियंत्रित व प्रायोगिक समूह को तीन श्रेणीयों में बांटा गया, चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभाव की उच्च स्थिति, मध्यम स्थिति व निम्न स्थिति।

तालिका में कुल 30 नियंत्रित समूह के किशोर विद्यार्थियों में से उच्च स्थिति, मध्यम स्थिति व निम्न स्थिति वाले किशोर विद्यार्थियों की संख्या क्रमशः 7, 20 व 3 पायी गयी जो कि कुल की क्रमशः 10.00, 66.67 व 23.33 प्रतिशत है। तथा कुल 30 प्रायोगिक समूह के किशोर विद्यार्थियों में से उच्च स्थिति, मध्यम स्थिति व निम्न स्थिति वाले किशोर विद्यार्थियों की संख्या क्रमशः 5, 18 व 7 पायी गयी जो कि कुल की क्रमशः 16.67, 60.00 व 23.33 प्रतिशत है। गणना द्वारा प्राप्त नियंत्रित व प्रायोगिक समूह के किशोर विद्यार्थियों के प्रतिशत के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रायोगिक समूह के किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "उत्साहपूर्ण बनाम निरूत्साहपूर्ण" में उत्साहपूर्णता का स्तर उच्च हुआ है। तथा उच्च, मध्यम व निम्न स्थिति वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "उत्साहपूर्ण बनाम निरूत्साहपूर्ण" पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

परिकल्पना संख्या – 1.3 – किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "आत्मविश्वासी बनाम दब्बू" पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

**सारणी संख्या 3** किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "आत्मविश्वासी बनाम दब्बू" पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभाव की प्रतिशतता व स्तर

| नियंत्रित समूह के किशोर विद्यार्थी | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **प्राप्तांक** | **कुल संख्या** | **वर्गवार संख्या** | **प्रतिशत** | **वर्गीकरण** |
| 16 व अधिक | 30 | 4 | 13.33 | उच्च स्तरीय |
| 9 से 15 | | 18 | 60.00 | मध्यम स्तरीय |
| 8 व इससे कम | | 8 | 26.67 | निम्न स्तरीय |
| **प्रायोगिक समूह के किशोर विद्यार्थी** | | | | |
| 16 व अधिक | 30 | 3 | 10.00 | उच्च स्तरीय |
| 9 से 15 | | 25 | 83.33 | मध्यम स्तरीय |
| 8 व इससे कम | | 2 | 6.67 | निम्न स्तरीय |

(MEAN+SD) (MEAN-SD)

**विश्लेषण :–** उक्त तालिका में किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "आत्मविश्वासी बनाम दब्बू" पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभाव की स्थिति के आधार पर नियंत्रित व प्रायोगिक समूह को तीन श्रेणीयों में बांटा गया, चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभाव की उच्च स्थिति, मध्यम स्थिति व निम्न स्थिति।

तालिका में कुल 30 नियंत्रित समूह के किशोर विद्यार्थियों में से उच्च स्थिति, मध्यम स्थिति व निम्न स्थिति वाले किशोर विद्यार्थियों की संख्या क्रमशः 4, 18 व 8 पायी गयी जो कि कुल की क्रमशः 13.33, 60.00 व 26.67 प्रतिशत है। तथा कुल 30 प्रायोगिक समूह के किशोर विद्यार्थियों में से उच्च स्थिति, मध्यम स्थिति व निम्न स्थिति वाले किशोर विद्यार्थियों की संख्या क्रमशः 3, 25 व 2 पायी गयी जो कि कुल की क्रमशः 10.00, 83.33 व 6.67 प्रतिशत है। गणना द्वारा प्राप्त नियंत्रित व प्रायोगिक समूह के किशोर विद्यार्थियों के प्रतिशत के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रायोगिक समूह के किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "आत्मविश्वासी बनाम दब्बू" में आत्मविश्वास का स्तर उच्च हुआ है। तथा मध्यम व निम्न स्थिति वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "आत्मविश्वासी बनाम दब्बू" पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

परिकल्पना संख्या – 1.4 – किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "सन्देहग्रस्त बनाम विश्वासी" पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

**सारणी संख्या – 4:** किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "सन्देहग्रस्त बनाम विश्वासी" पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभाव की प्रतिशतता व स्तर

| नियंत्रित समूह के किशोर विद्यार्थी | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **प्राप्तांक** | **कुल संख्या** | **वर्गवार संख्या** | प्रतिशत | वर्गीकरण |
| 17 व अधिक | 30 | 4 | 13.33 | उच्च स्तरीय |
| 6 से 16 | | 22 | 73.33 | मध्यम स्तरीय |
| 10 व इससे कम | | 4 | 13.33 | निम्न स्तरीय |
| **प्रायोगिक समूह के किशोर विद्यार्थी** | | | | |
| 17 व अधिक | 30 | 5 | 16.67 | उच्च स्तरीय |
| 6 से 16 | | 20 | 66.67 | मध्यम स्तरीय |
| 5 व इससे कम | | 5 | 16.67 | निम्न स्तरीय |

(MEAN+SD) (MEAN-SD)

**विश्लेषण :–** उक्त तालिका में किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "सन्देहग्रस्त बनाम विश्वासी" पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभाव की स्थिति के आधार पर नियंत्रित व प्रायोगिक समूह को तीन श्रेणीयों में बांटा गया, चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभाव की उच्च स्थिति, मध्यम स्थिति व निम्न स्थिति।

तालिका में कुल 30 नियंत्रित समूह के किशोर विद्यार्थियों में से उच्च स्थिति, मध्यम स्थिति व निम्न स्थिति वाले किशोर विद्यार्थियों की संख्या क्रमशः 4, 22 व 4 पायी गयी जो कि कुल की क्रमशः 13.33, 73.33 व 13.33 प्रतिशत है। तथा कुल 30 प्रायोगिक समूह के किशोर विद्यार्थियों में से उच्च स्थिति, मध्यम स्थिति व निम्न स्थिति वाले किशोर विद्यार्थियों की संख्या क्रमशः

5, 20 व 5 पायी गयी जो कि कुल की क्रमशः 16.67, 66.67 व 16.67 प्रतिशत है। गणना द्वारा प्राप्त नियंत्रित व प्रायोगिक समूह के किशोर विद्यार्थियों के प्रतिशत के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रायोगिक समूह के किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "सन्देहग्रस्त बनाम विश्वासी" में संदेहग्रस्तता का स्तर उच्च हुआ है। तथा उच्च व निम्न स्थिति वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "सन्देहग्रस्त बनाम विश्वासी" पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

परिकल्पना संख्या – 1.5 – किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "निराशावादी बनाम आशावादी" पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

**सारणी संख्या 5:** किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "निराशवादी बनाम आशावादी" पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभाव की प्रतिशतता व स्तर

| नियंत्रित समूह के किशोर विद्यार्थी | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **प्राप्तांक** | **कुल संख्या** | **वर्गवार संख्या** | **प्रतिशत** | **वर्गीकरण** |
| 16 व अधिक | 30 | 6 | 20.00 | उच्च स्तरीय |
| 6 से 15 | | 20 | 66.67 | मध्यम स्तरीय |
| 5 व इससे कम | | 4 | 13.33 | निम्न स्तरीय |
| **प्रायोगिक समूह के किशोर विद्यार्थी** | | | | |
| 16 व अधिक | 30 | 1 | 3.33 | उच्च स्तरीय |
| 6 से 15 | | 26 | 86.67 | मध्यम स्तरीय |
| 5 व इससे कम | | 3 | 10.00 | निम्न स्तरीय |

(MEAN+SD) (MEAN-SD)

**विश्लेषण :–** उक्त तालिका में किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "निराशावादी बनाम आशावादी" पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभाव की स्थिति के आधार पर नियंत्रित व प्रायोगिक समूह को तीन श्रेणीयों में बांटा गया, चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभाव की उच्च स्थिति, मध्यम स्थिति व निम्न स्थिति।

तालिका में कुल 30 नियंत्रित समूह के किशोर विद्यार्थियों में से उच्च स्थिति, मध्यम स्थिति व निम्न स्थिति वाले किशोर विद्यार्थियों की संख्या क्रमशः 6, 20 व 4 पायी गयी जो कि कुल की क्रमशः 20.00, 66.67 व 13.33 प्रतिशत है। तथा कुल 30 प्रायोगिक समूह के किशोर विद्यार्थियों में से उच्च स्थिति, मध्यम स्थिति व निम्न स्थिति वाले किशोर विद्यार्थियों की संख्या क्रमशः 1, 26 व 3 पायी गयी जो कि कुल की क्रमशः 3.33, 86.67 व 10.00 प्रतिशत है। गणना द्वारा प्राप्त नियंत्रित व प्रायोगिक समूह के किशोर विद्यार्थियों के प्रतिशत के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रायोगिक समूह के किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "निराशावादी बनाम आशावादी" में निराशावादी का स्तर उच्च हुआ है। तथा उच्च व निम्न स्थिति वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "निराशावादी बनाम आशावादी" पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

**सारणी संख्या 6:** किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "सांवेगिक–अस्थिरता बनाम सांवेगिक–स्थिरता" पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभाव की प्रतिशतता व स्तर

| नियंत्रित समूह के किशोर विद्यार्थी | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **प्राप्तांक** | **कुल संख्या** | **वर्गवार संख्या** | **प्रतिशत** | **वर्गीकरण** |
| 15 व अधिक | 30 | 6 | 20.00 | उच्च स्तरीय |
| 4 से 14 | | 24 | 80.00 | मध्यम स्तरीय |
| 3 व इससे कम | | 2 | 6.67 | निम्न स्तरीय |
| **प्रायोगिक समूह के किशोर विद्यार्थी** | | | | |
| 15 व अधिक | 30 | 1 | 3.33 | उच्च स्तरीय |
| 4 से 14 | | 20 | 66.67 | मध्यम स्तरीय |
| 3 व इससे कम | | 9 | 30.00 | निम्न स्तरीय |

(MEAN+SD) (MEAN-SD)

**विश्लेषण :–** उक्त तालिका में किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "सांवेगिक–अस्थिरता बनाम सांवेगिक–स्थिरता" पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभाव की स्थिति के आधार पर नियंत्रित व प्रायोगिक समूह को तीन श्रेणीयों में बांटा गया, चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभाव की उच्च स्थिति, मध्यम स्थिति व निम्न स्थिति।

तालिका में कुल 30 नियंत्रित समूह के किशोर विद्यार्थियों में से उच्च स्थिति, मध्यम स्थिति व निम्न स्थिति वाले किशोर विद्यार्थियों की संख्या क्रमशः 6, 24 व 2 पायी गयी जो कि कुल की क्रमशः 20.00, 80.00 व 6.67 प्रतिशत है। तथा कुल 30 प्रायोगिक समूह के किशोर विद्यार्थियों में से उच्च स्थिति, मध्यम स्थिति व निम्न स्थिति वाले किशोर विद्यार्थियों की संख्या क्रमशः 1, 20 व 9 पायी गयी जो कि कुल की क्रमशः 3.33, 66.67 व 30.00 प्रतिशत है। गणना द्वारा प्राप्त नियंत्रित व प्रायोगिक समूह के किशोर विद्यार्थियों के प्रतिशत के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रायोगिक समूह के किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "सांवेगिक–अस्थिरता बनाम सांवेगिक–स्थिरता" में सांवेगिक–स्थिरता का स्तर उच्च हुआ है। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि उच्च मध्यम व निम्न स्थिति वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "सांवेगिक–अस्थिरता बनाम सांवेगिक–स्थिरता" पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

परिकल्पना संख्या – 1.6 – किशोर विद्यार्थियों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

**सारणी संख्या – 7:** किशोर विद्यार्थियों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभाव की प्रतिशतता व स्तर

| नियंत्रित समूह के किशोर विद्यार्थी | | | | |
|---|---|---|---|---|
| प्राप्तांक | कुल संख्या | **वर्गवार संख्या** | प्रतिशत | वर्गीकरण |
| 85 व अधिक | 30 | 3 | 10.00 | उच्च स्तरीय |
| 57 से 84 | | 23 | 76.67 | मध्यम स्तरीय |
| 56 व इससे कम | | 4 | 13.33 | निम्न स्तरीय |
| **प्रायोगिक समूह के किशोर विद्यार्थी** | | | | |
| 85 व अधिक | 30 | 6 | 20.00 | उच्च स्तरीय |
| 57 से 84 | | 19 | 63.33 | मध्यम स्तरीय |
| 56 व इससे कम | | 5 | 16.67 | निम्न स्तरीय |

(MEAN+SD) (MEAN-SD)

**विश्लेषण :–** उक्त तालिका में किशोर विद्यार्थियों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभाव की स्थिति के आधार पर नियंत्रित व प्रायोगिक समूह को तीन श्रेणीयों में बांटा गया, चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभाव की उच्च स्थिति, मध्यम स्थिति व निम्न स्थिति।

तालिका में कुल 30 नियंत्रित समूह के किशोर विद्यार्थियों में से उच्च स्थिति, मध्यम स्थिति व निम्न स्थिति वाले किशोर विद्यार्थियों की संख्या क्रमशः 3, 23 व 4 पायी गयी जो कि कुल की क्रमशः 10.00, 76.67 व 13.33 प्रतिशत है। तथा कुल 30 प्रायोगिक समूह के किशोर विद्यार्थियों में से उच्च स्थिति, मध्यम स्थिति व निम्न स्थिति वाले किशोर विद्यार्थियों की संख्या क्रमशः 6, 19 व 5 पायी गयी जो कि कुल की क्रमशः 20.00, 63.33 व 16.67 प्रतिशत है। गणना द्वारा प्राप्त नियंत्रित व प्रायोगिक समूह के किशोर विद्यार्थियों के प्रतिशत के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रायोगिक समूह के किशोर विद्यार्थियों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास का स्तर उच्च हुआ है। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि उच्च मध्यम व निम्न स्थिति वाले किशोर विद्यार्थियों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

परिकल्पना संख्या – 2 – चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले एवं ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

परिकल्पना संख्या – 2.1 – चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले एवं ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "सक्रियता बनाम निष्क्रियता" में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

**सारणी संख्या 8:** चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले एवं ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "सक्रियता बनाम निश्क्रियता" के मध्यमान के अन्तर की गणना।

| **किशोर विद्यार्थियों** | संख्या (N) | मध्यमान (M) | प्रमाप विचलन (σ) | टी मान (t) | सार्थकता स्तर | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | 0.05 | 0.01 |
| चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले | 30 | 15.13 | 3.40 | 2.01 | सार्थक अन्तर है। | सार्थक अन्तर नहीं है। |
| चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग न लेने वाले | 30 | 13.57 | 2.58 | | | |

($df = N_1+N_2-2=30+30-2=58$)

**व्याख्या –** उक्त सारणी में चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले एवं ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "सक्रियता बनाम निष्क्रियता" के प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 15.13 एवं 13.57 तथा मानक विचलनों का मान क्रमशः 3.40 एवं 2.58 प्राप्त हुए हैं। इन मानों के आधार पर दोनों समूहों के मध्य टी मान (T Value) 2.01 प्राप्त हुआ है। टी मान सारणी में स्वतंत्रता के अंश 58(df) स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 सार्थकता स्तर पर 2.00 एवं 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.66 दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त टी मान 0.05 सार्थकता स्तर से उच्च व 0.01 सार्थकता स्तर से निम्न है। अतः यहाँ पर निर्धारित शून्य परिकल्पना को सार्थकता के 0.05 स्तर पर अस्वीकृत किया जाता है। तथा निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले एवं ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "सक्रियता बनाम निष्क्रियता" में आंशिक अन्तर पाया गया है। प्राप्त मध्यमानों के आधार पर कहा जा सकता है कि चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "सक्रियता बनाम निश्क्रियता" का स्तर भाग ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "सक्रियता बनाम निष्क्रियता" की अपेक्षा उच्च पाया गया।

परिकल्पना संख्या – 2.2 – चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले एवं ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "उत्साहपूर्ण बनाम निरूत्साहपूर्ण" में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

**सारणी संख्या – 9:** चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले एवं ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "उत्साहपूर्ण बनाम निरूत्साहपूर्ण" के मध्यमान के अन्तर की गणना।

| **किशोर विद्यार्थी** | **संख्या (N)** | **मध्यमान (M)** | **प्रमाप विचलन (σ)** | **टी मान (t)** | **सार्थकता स्तर** | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | **0.05** | **0.01** |
| चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले | 30 | 14.40 | 3.29 | 1.18 | सार्थक अन्तर नहीं है। | सार्थक अन्तर नहीं है। |
| चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग न लेने वाले | 30 | 13.40 | 3.28 | | | |

($df = N_1+N_2-2=30+30-2=58$)

**व्याख्या –** उक्त सारणी में चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले एवं ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "उत्साहपूर्ण बनाम निरूत्साहपूर्ण" के प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 14.40 एवं 13.40 तथा मानक विचलनों का मान क्रमशः 3.29 एवं 3.28 प्राप्त हुए हैं। इन मानों के आधार पर दोनों समूहों के मध्य टी मान (T Value) 1.18 प्राप्त हुआ है। टी

मान सारणी में स्वतंत्रता के अंश 58(df) स्वतंत्रता के अंश पर 0. 05 सार्थकता स्तर पर 2.00 एवं 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.66 दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त टी मान 0.05 व 0.01 सार्थकता स्तर से निम्न है। अतः यहाँ पर निर्धारित शून्य परिकल्पना को सार्थकता के दोनों स्तरों पर स्वीकृत किया जाता है। तथा निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले एवं ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "उत्साहपूर्ण बनाम निरूत्साहपूर्ण" में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। प्राप्त मध्यमानों के आधार पर कहा जा सकता है कि चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "उत्साहपूर्ण बनाम निरूत्साहपूर्ण" का स्तर भाग ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "उत्साहपूर्ण बनाम निरूत्साहपूर्ण" की अपेक्षा उच्च पाया गया।

परिकल्पना संख्या – 2ण्3 – चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले एवं ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "आत्मविश्वासी बनाम दब्बू" में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

**सारणी संख्या – 10:** चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले एवं ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "आत्मविश्वासी बनाम दब्बू" के मध्यमान के अन्तर की गणना।

| किशोर विद्यार्थी | संख्या (N) | मध्यमान (M) | प्रमाप विचलन (σ) | टी मान (t) | सार्थकता स्तर | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | 0.05 | 0.01 |
| चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले | 30 | 12.83 | 2.23 | 2.86 | सार्थक अन्तर है। | सार्थक अन्तर है। |
| चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग न लेने वाले | 30 | 10.77 | 3.28 | | | |

(df = $N_1$+$N_2$-2=30+30-2=58)

**व्याख्या –** उक्त सारणी में चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले एवं ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "आत्मविश्वासी बनाम दब्बू" के प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 12.83 एवं 10.77 तथा मानक विचलनों का मान क्रमशः 2.23 एवं 3.28 प्राप्त हुए हैं। इन मानों के आधार पर दोनों समूहों के मध्य टी मान (T Value) 2.86 प्राप्त हुआ है। टी मान सारणी में स्वतंत्रता के अंश 58(df) स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 सार्थकता स्तर पर 2.00 एवं 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.66 दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त टी मान 0.05 व 0.01 सार्थकता स्तर से उच्च है। अतः यहाँ पर निर्धारित शून्य परिकल्पना को सार्थकता के दोनों स्तरों पर अस्वीकृत किया जाता है। तथा निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले एवं ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "आत्मविश्वासी बनाम दब्बू" में सार्थक अन्तर पाया गया है। प्राप्त मध्यमानों के आधार पर कहा जा सकता है कि चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "आत्मविश्वासी बनाम दब्बू" का स्तर भाग ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "आत्मविश्वासी बनाम दब्बू" की अपेक्षा उच्च पाया गया।

परिकल्पना संख्या – 2.4 – चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले एवं ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "सन्देहग्रस्त बनाम विश्वासी" में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

**सारणी संख्या – 11:** चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले एवं ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "सन्देहग्रस्त बनाम विश्वासी" के मध्यमान के अन्तर की गणना।

| किशोर विद्यार्थी | संख्या (N) | मध्यमान (M) | प्रमाप विचलन (σ) | टी मान (t) | सार्थकता स्तर | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | 0.05 | 0.01 |
| चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले | 30 | 11.23 | 5.30 | 0.22 | सार्थक अन्तर नहीं है। | सार्थक अन्तर नहीं है। |
| चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग न लेने वाले | 30 | 10.93 | 5.30 | | | |

(df = $N_1$+$N_2$-2=30+30-2=58)

व्याख्या – उक्त सारणी में चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले एवं ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "सन्देहग्रस्त बनाम विश्वासी" के प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 11.23 एवं 10.93 तथा मानक विचलनों का मान क्रमशः 5.30 एवं 5.30 प्राप्त हुए हैं। इन मानों के आधार पर दोनों समूहों के मध्य टी मान (T Value) 0.22 प्राप्त हुआ है। टी मान सारणी में स्वतंत्रता के अंश 58(df) स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 सार्थकता स्तर पर 2.00 एवं 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.66 दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त टी मान 0.05 व 0.01 सार्थकता स्तर से निम्न है। अतः यहाँ पर निर्धारित शून्य परिकल्पना को सार्थकता के दोनों स्तरों पर स्वीकृत किया जाता है। तथा निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले एवं ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "सन्देहग्रस्त बनाम विश्वासी" में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। प्राप्त मध्यमानों के आधार पर कहा जा सकता है कि चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "सन्देहग्रस्त बनाम विश्वासी" का स्तर ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "सन्देहग्रस्त बनाम विश्वासी" की अपेक्षा उच्च पाया गया।

परिकल्पना संख्या – 2.5 – चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले एवं ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "निराशवादी बनाम आशावादी" में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

**सारणी संख्या – 12:** चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले एवं ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "निराशवादी बनाम आशावादी" के मध्यमान के अन्तर की गणना।

| किशोर विद्यार्थी | संख्या (N) | मध्यमान (M) | प्रमाप विचलन (σ) | टी मान (t) | सार्थकता स्तर | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | 0.05 | 0.01 |
| चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले | 30 | 10.43 | 3.35 | 0.59 | सार्थक अन्तर नहीं है। | सार्थक अन्तर नहीं है। |
| चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग न लेने वाले | 30 | 11.13 | 5.51 | | | |

(df = $N_1$+$N_2$-2=30+30-2=58)

**व्याख्या –** उक्त सारणी में चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले एवं ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "निराशवादी बनाम आशावादी" के प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 1043 एवं 11.13 तथा मानक विचलनों का मान क्रमशः 3.35 एवं 5.51 प्राप्त हुए हैं। इन मानों के आधार पर दोनों समूहों के मध्य टी मान (T Value) 0.59 प्राप्त हुआ है। टी मान सारणी में स्वतंत्रता के अंश 58(df) स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 सार्थकता स्तर पर 2.00 एवं 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.66 दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त टी मान 0.05 व 0.01 सार्थकता स्तर से निम्न है। अतः यहाँ पर निर्धारित शून्य परिकल्पना को सार्थकता के दोनों स्तरों पर स्वीकृत किया जाता है। तथा निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले एवं ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "निराशवादी बनाम आशावादी" में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। प्राप्त मध्यमानों के आधार पर कहा जा सकता है कि चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "निराशवादी बनाम आशावादी" का स्तर भाग ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "निराशवादी बनाम आशावादी" की अपेक्षा निम्न पाया गया।

परिकल्पना संख्या – 2.6 – चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले एवं ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "सांवेगिक–अस्थिरता बनाम सांवेगिक–स्थिरता" में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

**सारणी संख्या – 13:** चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले एवं ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "सांवेगिक–अस्थिरता बनाम सांवेगिक–स्थिरता" के मध्यमान के अन्तर की गणना।

| किशोर विद्यार्थी | संख्या (N) | मध्यमान (M) | प्रमाप विचलन (σ) | टी मान (t) | सार्थकता स्तर | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | 0.05 | 0.01 |
| चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले | 30 | 6.77 | 4.74 | 3.08 | सार्थक अन्तर है। | सार्थक अन्तर है। |
| चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग न लेने वाले | 30 | 10.57 | 4.82 | | | |

(df = $N_1+N_2$-2=30+30-2=58)

**व्याख्या –** उक्त सारणी में चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले एवं ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "सांवेगिक–अस्थिरता बनाम सांवेगिक–स्थिरता" के प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 6.77 एवं 10.57 तथा मानक विचलनों का मान क्रमशः 4.74 एवं 4.82 प्राप्त हुए हैं। इन मानों के आधार पर दोनों समूहों के मध्य टी मान (T Value) 3.08 प्राप्त हुआ है। टी मान सारणी में स्वतंत्रता के अंश 58(df) स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 सार्थकता स्तर पर 2.00 एवं 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.66 दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त टी मान 0.05 व 0.01 सार्थकता स्तर से उच्च है। अतः यहाँ पर निर्धारित शून्य परिकल्पना को सार्थकता के दोनों स्तरों पर अस्वीकृत किया जाता है। तथा निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले एवं ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "सांवेगिक–अस्थिरता बनाम सांवेगिक–स्थिरता" में सार्थक अन्तर पाया गया है। प्राप्त मध्यमानों के आधार पर कहा जा सकता है कि चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "सांवेगिक–अस्थिरता बनाम सांवेगिक–स्थिरता" का स्तर भाग ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "सांवेगिक–अस्थिरता बनाम सांवेगिक–स्थिरता" की अपेक्षा निम्न पाया गया।

परिकल्पना संख्या – 2.6 – चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले एवं ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

**सारणी संख्या – 14:** चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले एवं ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास के मध्यमान के अन्तर की गणना।

| किशोर विद्यार्थी | संख्या (N) | मध्यमान (M) | प्रमाप विचलन (σ) | टी मान (t) | सार्थकता स्तर | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | 0.05 | 0.01 |
| चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले | 30 | 70.80 | 13.91 | 0.13 | सार्थक अन्तर नहीं है। | सार्थक अन्तर नहीं है। |
| चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग न लेने वाले | 30 | 70.37 | 12.46 | | | |

(df = $N_1+N_2$-2=30+30-2=58)

**व्याख्या –** उक्त सारणी में चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले एवं ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास के प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 70.80 एवं 70.37 तथा मानक विचलनों का मान क्रमशः 13.91 एवं 12.46 प्राप्त हुए हैं। इन मानों के आधार पर दोनों समूहों के मध्य टी मान (T Value) 0.13 प्राप्त हुआ है। टी मान सारणी में स्वतंत्रता के अंश 58(df) स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 सार्थकता स्तर पर 2.00 एवं 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.66 दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त टी मान 0.05 व 0.01 सार्थकता स्तर से निम्न है। अतः यहाँ पर निर्धारित शून्य परिकल्पना को सार्थकता के दोनों स्तरों पर स्वीकृत किया जाता है। तथा निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले एवं ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। प्राप्त मध्यमानों के आधार पर कहा जा सकता है कि चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास का स्तर ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास की अपेक्षा उच्च पाया गया।

परिकल्पना संख्या – 1.6 – किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के आयाम "सांवेगिक–अस्थिरता बनाम सांवेगिक–स्थिरता" पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

## शोध की सम्प्राप्तियाँ एवं निष्कर्ष (Findings & Conclusion)

### 1. परिकल्पनाः–

**परिकल्पना संख्या – 1 –** किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। को देखने हेतु सांख्यिकी गणनाओं के आधार पर परीक्षण किया गया, जिसमें प्रायोगिक समूह के किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास का स्तर नियंत्रित समूह के किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के स्तर की अपेक्षा अधिक पाया गया है।

**परिकल्पना संख्या – 2 –** चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले एवं ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। को देखने हेतु सांख्यिकी गणनाओं के आधार पर परीक्षण किया गया, जिसमें व्यक्तित्व विकास के आयाम "उत्साहपूर्ण बनाम निरूत्साहपूर्ण", "सन्देहग्रस्त बनाम विश्वासी", "निराशवादी बनाम आशावादी"व सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास में गणना द्वारा प्राप्त टी मान 0.05 व 0. 01 सार्थकता स्तर से निम्न पाया गया है, व "सक्रियता बनाम निष्क्रियता" आयाम में गणना द्वारा प्राप्त टी मान 0.05 सार्थकता स्तर से उच्च व 0.01 सार्थकता स्तर से निम्न पाया गया है। जबकि "सांवेगिक–अस्थिरता बनाम सांवेगिक–स्थिरता" व "आत्मविश्वासी बनाम दब्बू" आयाम में गणना द्वारा प्राप्त टी मान 0.05 व 0.01 सार्थकता स्तर से उच्च पाया गया है।

## 3. संदर्भ


1. "प्रारंभिक सामाजिक अनुसंधान, आर्य, डॉ.एस.पी. (1986) साहित्य भवन आगरा"
2. "विभाग में शिक्षानुसंधान", ओमप्रकाश व्यास(1997), माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, राजस्थान बीकानेर
3. "शिक्षा मनोविज्ञान व सांख्यिकी के आधार, अरोड़ा, रीता व मारवाह(2001), 23 चौड़ा रास्ता, जयपुर
4. "जीवन विद्या एक परिचय", ए. नागराज(2004), जीवन विद्या प्रकाशन अमरकंटक, श्री भजन आश्रम अमरकंटक
5. "जीवन विद्या एक परिचय", ए. नागराज(2004), जीवन विद्या प्रकाशन अमरकंटक, श्री भजन आश्रम अमरकंटक
6. "समाधानात्मक भौतिकवाद", ए. नागराज(2004), जीवन विद्या प्रकाशन अमरकंटक, श्री भजन आश्रम अमरकंटक
7. "अनुभव दर्शन", ए. नागराज (2004), जीवन विद्या प्रकाशन अमरकंटक, श्री भजन आश्रम अमरकंटक
8. "अनुभवात्मक अध्यात्मवाद", ए. नागराज(2004), जीवन विद्या प्रकाशन अमरकंटक, श्री भजन आश्रम अमरकंटक
9. "मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान, ए. नागराज(2004), जीवन विद्या प्रकाशन अमरकंटक, श्री भजन आश्रम अमरकंटक
10. "मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान, ए. नागराज(2004), जीवन विद्या प्रकाशन अमरकंटक, श्री भजन आश्रम अमरकंटक
11. "अनुसंधान विधियाँ" कपिल, एच.के. (2007)एच.पी. भार्गव बुक हाउस 4/230, कचहरी घाट. आगरा।